26 ''अनुपयोगी'' होने का महत्व

धनवन्ती नायक

क्या आपको अपने जीवन का वह समय याद है जब आप एक चीज करना चाहते थे, और आपका परिवार चाहता था कि आप कुछ और करें। आपने इस बात का जबरदस्त प्रतिरोध किया, आपको सुधरने के लिए मजबूर किया गया, आपने फिर विद्रोह किया और कड़वाहट से भरकर आप यह सोचने लगे कि संसार आपके खिलाफ है? क्या आपको दूसरों के द्वारा यह बताया जाना याद है कि जो आप करना चाहते थे वह ''अनुपयोगी'' था? निश्चित ही आपको यह सब याद होगा क्योंकि व्यवहारिक रूप से देखें तो इसी को किशोरावस्था कहते हैं।

मेरे और मेरे कई दोस्तों ने 70 और 80 के दशक की तत्कालीन बम्बई में बड़े होने के दौर में जिस दुनिया का अनुभव किया उसमें सभी तरह के लोग शामिल थे। हमने उनके साथ खुशियाँ मनाना तथा उनके दुख बाँटना सीखा। सब्जी बेचने वाले, घरेलू बाइयाँ, दूधवाले, धोबी, ये सब हमारी देहरी पर आते थे और अपने साथ उस दुनिया को लाते थे जिसे हम उनके किस्से–कहानियों, वार्तालापों और संवादों द्वारा जान पाते थे। हम सार्वजनिक यातायात साधनों से स्कूल जाते थे और रास्ते में हमें ऐसी अन्य चीजों का भी अनुभव होता था, जो संसार में लोगों के साथ व्यवहारिक सम्बन्धों में हमारे लिए, खासतौर पर महिला होने के नाते, उतनी ही महत्वपूर्ण थीं जितनी पढ़ाई। इस प्रकार, स्कूल के बाहर हमें ऐसे किस्से–कहानियों, कविताओं, लोकप्रिय तौर–तरीकों, और विविधता के अनुभवों के जरिए एक अलग प्रकार की शिक्षा मिली; और यह इन बातों को हमारे लिए विभिन्न संस्थाओं और अध्ययनक्षेत्रों में विविध प्रकार की उदारवादी कलाविषयों के अन्तर्गत अवधारणाबद्ध किए जाने के बहुत पहले मिली। इन्हीं के जरिए हमने अपनी दुनिया के साथ और खुदके साथ भी अपने शुरुआती नाजुक सम्बन्ध स्थापित किए।

दुर्भाग्य से, हमारे, शिक्षा की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ते जाने के साथ–साथ 'अनुभव की दुनिया' का 'ज्ञान की दुनिया' से अलगाव भी बढ़ता गया, और अन्ततः हम ऐसे ज्ञानाधार के साथ स्नातक और पेशेवर विशेषज्ञ बन गए जिसका किसी भी चीज से कोई नाता नहीं था – संसार और बौद्धिकता के बीच यह दरार बिलकुल पक्की और पूरी थी। हम लोग ऐसे ज्ञान के स्वामी थे जो हवाई था और इसलिए वह किसी भी ठोस व सार्थक कार्य को अन्जाम देने योग्य नहीं था।

पिछले तीन दशकों में दुनिया के बदलने के तरीकों और उनकी संख्या में जबर्दस्त बढ़ोत्तरी हुई है। यह बदलाव एक तरफ तो नई तकनीकों द्वारा लाए गए नए उत्पादों और उनके हमारे जीवन में हर तरफ छा जाने के कारण हुआ है, और दूसरी तरफ मध्यम वर्ग के लगातार बढ़ते एकाकीपन के कारण आया है। यहाँ तक कि अब डाक हमारे दरवाजों की बजाय हमारे डेस्कटॉप्स पर आती है, और डाकिया अब कहीं भी दो बार चिट्ठी नहीं डालता। ज्ञान और अनुभव के इस विच्छेद के नए–नए आयाम और अनेक प्रभाव सामने आए हैं। करुणा की भावना से अब हम अछूते ही रहते हैं; वह हमारी चेतना की दहलीज को निश्चित ही कभी नहीं लाँघ पाती। खण्डित परिवार, आर्थिक असुरक्षा, गरीबी, प्रवासन, हिंसा और झगड़े हमारी रोजमर्रा की शब्दावली का हिस्सा बन गए हैं, फिर भी हम अपने अनुभव में उनके प्रति उदासीन रहते हैं; वे सिर्फ टीवी पर देखने की बातें लगती हैं। गहरे एकान्त के लम्हों में भी हम फेसबुक पर व्यस्त रहते हैं – एकान्त इतना असहनीय लगने लगता है कि हम आभासी समय और स्थान की ऐसी दुनिया में पहुँच जाते हैं जहाँ माउस की एक क्लिक पर हमारे सामने बतियाने के लिए लोगों की लम्बी सूची आ जाती है, भले ही प्रत्यक्ष बात करने की स्थिति में हमारे पास उनसे कहने को कुछ न हो। तो इस प्रकार, नई तकनीकों की मदद से जहाँ आभासी दुनिया में तो हम मिनिट दर मिनिट एक–दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं, वहीं दूसरी तरफ हम अपनी अन्तरात्माओं से तथा बृहद दुनिया की वास्तविकताओं से दूर होते जा रहे हैं। वह काव्य, वह साहित्य, वह दर्शन, वह कला, और हाँ, वे लोग, जो हमें ''पूर्णता'' देते थे और हमारे भीतर ही मौजूद किसी गहरे यथार्थ के साथ हमें लयबद्ध किए रखते थे, और साथ ही ऐसे विभिन्न संसारों से हमारा परिचय कराते थे जिनसे हम अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए थे, वे सब लगभग गायब हो गए हैं। हमारी राजनीति और हमारी एकजुटता विज्ञान बन गए हैं; हमारी नैतिकता तो अब बची ही नहीं है।

तो ऐसी दुनिया में, जो निरन्तर हमें एक–दूसरे से अलग करती जा रही है और हमें विविधता का अनुभव नहीं करने देती, उदार कलाविषय और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वे व्यक्तियों की हैसियत से बृहद दुनिया के साथ होने वाले हमारे क्रियाकलापों में हमारी मदद करते हैं। वे अन्य विश्वदर्शनों और भिन्न दृष्टिकोणों से हमें परिचित कराते हैं। वे हमें यह भी याद दिलाते हैं कि इंजीनियरों, डॉक्टरों, लेखाकारों, शिक्षकों के रूप में, और निश्चित ही सभी गतिविधियों और पेशों में, और इतना ही विद्वानों के रूप में भी, हमारे जीवन के हर पल हमारे और दुनिया के बीच ऐसे अटूट सम्बन्ध होते हैं जिन्हें अनदेखा करके हम केवल अपना अनिष्ट ही कर सकते हैं। जैसे हर किशोर कथा–साहित्य, काव्य और कला से विचार, समझ और

अनुभव हासिल करता है, उसी प्रकार, तर्क दिया जा सकता है कि, हमारे विज्ञान और उतने ही हमारे जीवन भी मानविकी के विषयों के माध्यम से ही वास्तव में सामाजिक और गहरे अर्थों में मानवीय बनते हैं।

> *तो ऐसी दुनिया में, जो निरन्तर हमें एक–दूसरे से अलग करती जा रही है और हमें विविधता का अनुभव नहीं करने देती, उदार कलाविषय और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वे व्यक्तियों की हैसियत से बृहद दुनिया के साथ होने वाले हमारे क्रियाकलापों में हमारी मदद करते हैं। वे अन्य विश्वदर्शनों और भिन्न दृष्टिकोणों से हमें परिचित कराते हैं। वे हमें यह भी याद दिलाते हैं कि इंजीनियरों, डॉक्टरों, लेखाकारों, शिक्षकों के रूप में, और निश्चित ही सभी गतिविधियों और पेशों में, और इतना ही विद्वानों के रूप में भी, हमारे जीवन के हर पल हमारे और दुनिया के बीच ऐसे अटूट सम्बन्ध होते हैं जिन्हें अनदेखा करके हम केवल अपना अनिष्ट ही कर सकते हैं।*

उदारवादी कला विषयों की बृहद भूमिका की सिफारिश अन्य लोगों ने भी की है, और काफी अच्छी तरह की है। इसके पक्ष में दिए गए तर्क हैं कि वे सर्व–संतुलित नागरिक समुदाय विकसित करते हैं, समीक्षात्मक सोच और सार्वजनिक चर्चा को प्रोत्साहित करते हैं और जीवन के संघर्ष में हमारी सिर्फ अपनी ही नहीं बल्कि दूसरों की अभीप्साओं को भी समझने में सहायक होते हैं। इन सभी शानदार खूबियों के बावजूद, जो उदारवादी कला विषयों में मिली शिक्षा से विकसित होती हैं, ये विषय मानो बड़े भाइयों विज्ञान और यांत्रिकी (और सौतेले भाई प्रबन्धन) द्वारा जबरन धकेले जाकर हमारे शिक्षातंत्रों से बाहर किए जा रहे हैं। हमारे युवाओं को और भी कम उम्र में विशिष्ट प्रकार की शिक्षा मिल रही है – इसका सबसे अच्छा (या सबसे खराब, यह आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है) उदाहरण है कि अब स्नातक–पूर्व स्तर पर ही व्यावसायिक प्रबन्धन में डिग्री प्रदान की जा रही है, जो स्वयं शिक्षा को ही एक मजाक बना देता है। पर ये उदारवादी कला विषय ही हैं जो किसी न किसी तरीके से शिक्षा से बाहर किए जा रहे हैं। जबकि यह साफ दिखता है कि आज हमें उनकी, कम नहीं, ज्यादा जरूरत है।

> *दुर्भाग्य से, कामकाजी दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के प्रयास में, शिक्षा की दुनिया (या आप कह सकते हैं, विचारों की दुनिया जहाँ ज्ञान का निर्माण होता है) सक्षम बनने के प्रयास में अपने ऊपर सामाजिक रूप से और भी अधिक कटा हुआ पाठ्यक्रम तथा आलोचनारहित शिक्षा पद्धति लागू करके अपने को बेहतर बनाने का प्रयास करती है।*

शिक्षा में सामाजिक विज्ञानों को शामिल करने के बड़े लाभ हैं, लेकिन सामाजिक विज्ञानों को पढ़ाना सरल काम नहीं है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क – एनसीएफ) 2005 के अनुसार एक बड़ी समस्या यह है कि सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में उपयोगितावाद का दृष्टिकोण अपनाया गया है जो व्यक्ति को केवल विकास के एक उपकरण के भाँति देखता है। एनसीएफ इसे बदलकर एक मूल्यपरक दृष्टिकोण अपनाने की सिफारिश करता है ताकि समाज में समता, न्याय और गरिमा के मुद्दों पर जोर दिया जाए जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक न्याय के प्रति वास्तविक चिन्ता जागृत हो। पर एनसीएफ यह नहीं बताता कि यह परिवर्तन कैसे लाया जाएगा। हमारे लिए जरूरत इस बात की है कि सामाजिक विज्ञानों सहित विज्ञान के हमारे सभी अध्ययनक्षेत्र गहराई से मानविकी के विषयों से जुड़ें और उनके बीच लुप्त हो चुका सक्रिय आदान–प्रदान फिर से स्थापित हो। मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के और गहरे सक्रिय सम्बन्धों के द्वारा ही उदारवादी कला विषय फिर से शिक्षा में प्रासंगिक बन सकते हैं।

आश्चर्य की बात यह है कि उपयोगितावाद और समानतावाद के बीच के संघर्ष की अनुगूँज कार्यक्षेत्र में, जिसे आप चाहें तो ''असली संसार'' भी कह सकते हैं, भी दिखाई पड़ती है। हालाँकि यहाँ मामला उलटा है, और विडम्बना यह है कि उदारवादी कला विषय जिन्हें पाठ्यचर्या में उपयोगितावाद से जरूरत से ज्यादा प्रभावित माना जाता है, यहाँ ज्यादातर किसी काम के नहीं समझे जाते। इसलिए इन विषयों में सर्वोत्तम स्नातकों के लिए भी मुश्किल से कोई नौकरियाँ होती हैं, और अकादमिक क्षेत्र तथा गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) को छोड़कर संगठित जीवन में उनके लिए उन्नति की ओर ले जाने वाला लगभग कोई भी कार्यक्षेत्र नहीं होता। कामकाजी दुनिया अभी भी मानती है कि जिन स्नातकों को वे नौकरी पर रखते हैं वे उनके लिए कुछ अधिक उपयोगी नहीं होते

(मजे की बात यह है कि विज्ञान और तकनीकी स्नातकों के बारे में भी उसका यही खयाल होता है, लेकिन उन्हें किसी तरह संगठनों में खपा लिया जाता है)।

उदारवादी कला विषयों के बचाव में कई दलीलें अन्य विषयों की पृष्ठभूमियों वाले विद्वानों ने भी दी हैं, परन्तु जरा देखें कि ऐसे एक शुभचिन्तक लेकिन भ्रमित टिप्पणीकार, किसी छोटे–मोटे माध्यम में नहीं, बल्कि न्यूयॉर्क टाइम्स में मानविकी विषयों का पक्ष रखने का प्रयास करते हुए क्या कहते हैं: ''आपके पास विराट शक्ति होगी यदि आप दफ्तर में वह व्यक्ति हैं जो एक स्पष्ट और संक्षिप्त मेमो लिख सकता है।'' इस बात को एक तरफ छोड़कर कि कोई भी मानविकी विषयों का अध्ययन इसलिए नहीं करता कि वह अच्छा मेमो लिखने का संदेहास्पद कौशल हासिल कर सके, बड़ा मुद्दा यह है कि कामकाजी दुनिया उदारवादी कला विषयों के विशाल ज्ञानाधार को समेटकर सिर्फ कुछ ''कौशलों'' (बल्कि ''हल्के कौशलों'', जो और भी बुरा है) तक सीमित करके हमारे प्रति बहुत बड़ा अन्याय करती है। कामकाजी दुनिया ''कौशल समूहों'' और ''परिणाम देने वाली'' योग्यता की माँग तो करती है, पर यह नहीं समझती कि इन्हें बेहतर बनाने के लिए सभी को, कम नहीं, और अधिक उदारवादी शिक्षा की जरूरत है।

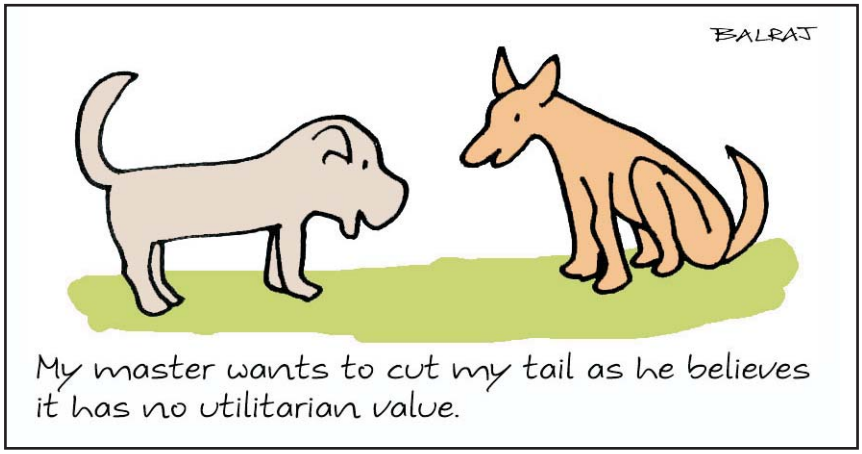

दुर्भाग्य से, कामकाजी दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के प्रयास में, शिक्षा की दुनिया (या आप कह सकते हैं, विचारों की दुनिया जहाँ ज्ञान का निर्माण होता है) सक्षम बनने के प्रयास में अपने ऊपर सामाजिक रूप से और भी अधिक कटा हुआ पाठ्यक्रम तथा आलोचनारहित शिक्षा पद्धति लागू करके अपने को बेहतर बनाने का प्रयास करती है। इस तरह का संसार से कटा हुआ ज्ञान चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन, विज्ञान आदि क्षेत्रों में भी उतना ही व्यापक है। ये क्षेत्र पेशेवर विशेषज्ञ बनाते हैं जो निश्चित रूप से किसी एक दिशा में ''प्रभावशाली'' होते हैं, पर जिनका ज्ञान कई अन्य दिशाओं से कटा हुआ और अप्रासंगिक होता है – अप्रासंगिक, क्योंकि वे लोगों के व्यक्तित्व की और समाज में सामाजिक की उपेक्षा करते हैं; अप्रासंगिक, क्योंकि जो कुछ उन्हें पढ़ाया गया है उसे उन्होंने बिना किसी आलोचना के स्वीकार कर लिया है; अप्रासंगिक, क्योंकि उन्होंने उस बृहद ढाँचे को नहीं समझा है जिसके भीतर यह ज्ञान निर्मित हुआ है। उन्हें, कम नहीं, अधिक उदारवादी शिक्षा की जरूरत है।

इस सबके बाद भी, संसार को समझने और उसके साथ सक्रिय सम्बन्ध बनाने का संघर्ष करने वाले इन विषयों को उनके शुभचिन्तक ज्यादा से ज्यादा सिर्फ ''कौशलों का समूह'' मानते हैं जबकि उनके आलोचक तो उन्हें ''अप्रासंगिक'' और ''अनुपयोगी'' मानते हैं। कामकाज के विशद संसार को उन प्रयासों का महत्व स्वीकार करने की जरूरत है जो उदारवादी कला विषयों ने समाज को और उसमें हमारी सही जगह – व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से – को समझने के लिए किए हैं। उन्हें समझना होगा कि समाज एक जटिल तंत्र है और उसे सिर्फ इस या उस चीज तक सीमित कर देना तात्कालिक दृष्टि से लाभकारी हो सकता है, पर अन्ततः उससे हानि ही होगी। सूचना की बाढ़ वाले इस समाज में लोगों की चीजों का मूल्यांकन करने की योग्यता, और साथ ही विभिन्न दृष्टिकोणों की पड़ताल करने और उनका प्रत्युत्तर देने की योग्यता विकसित करने की आवश्यकता अब पहले से कहीं ज़्यादा अनिवार्य हो गई है। वास्तव में, उन लोगों के लिए अधिक सरकारी सहायता जुटाने के लिए, जिन्हें उसकी सबसे ज्यादा जरूरत है तथा बेहतर कानूनों और सुशासन के लिए, कम नहीं, और ज्यादा उदारवादी शिक्षा अत्यावश्यक है।

अब समय आ गया है कि हममें से बृहत्तर उदारवादी कला विषयों के लोग अन्य अध्ययन क्षेत्रों और कार्यक्षेत्रों से गहराई से जुड़ें और उनके ज्ञान को फिर से प्रासंगिक बनाएँ। यह समय है कि हर लेखक, दार्शनिक, इतिहासकार, सामाजिक वैज्ञानिक, कवि और कलाकार आगे आए और अपनी जिम्मेदारी निभाए। यह समय है कि हम जोर देकर इस कामकाजी दुनिया, इस तथाकथित ''असली दुनिया'' को यह बताएँ कि कार्यकुशलता, मापन की शुद्धता और लाभ–क्षमता के नाम पर वे जो करते हैं वह शिक्षा की जरूरतों के लिए अप्रासंगिक है, और निश्चित ही संसार, जैसा हममें से अनेक उसे अनुभव करते और समझते हैं, के लिए भी अप्रासंगिक है।

चाहे हमें जितना भी अप्रासंगिक, भ्रमित करने वाला और रहस्यवादी

बताया जाए, पर उदारवादी कला विषयों की शिक्षा के इस संसार – इस क्रीड़ामय संसार – में ही विचार जन्मते और पोषित होते हैं, आदर्शों का संरक्षण होता है, और प्रासंगिकता और अप्रासंगिकता के सवालों पर व्यापक विमर्श के अन्तर्गत चर्चा और बहस होती है, जो कभी अमूर्त रूप से और कभी सार्वजनिक हित के सन्दर्भ में होती है।

इसी अर्थ में जो सबसे अधिक अकादमिक है वही सबसे अधिक उपयोगी भी है। अब समय है कि इस भावना के साथ ही हम अपनी किशोरावस्था के ''अप्रासंगिक'' और ''अनुपयोगी'' आदर्शों में फिर से आस्था व्यक्त करें क्योंकि शायद आज हमें उन्हीं की जरूरत है।

धनवन्ती नायक *एक लेखिका हैं जिन्होंने शिक्षा की सीढ़ी के विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र और दर्शनशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का भी अध्ययन किया और प्रस्तुति देने वाले कलाकारों के साथ काम किया है। विशेष रूप से उन्होंने समसामयिक नृत्य कलाकारों को सौन्दर्यबोध और सामाजिक सिद्धान्त की शिक्षा दी है। एक शोध सलाहकार की हैसियत से उन्होंने विविध प्रकार के संगठनों और क्षेत्रों में अन्तर्विषयी कार्य किया है। वर्तमान में वे मणिपाल विश्वविद्यालय के मणिपाल इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन्स की फैकल्टी सदस्य हैं। उनसे इस dhanunayak@yahoo.com ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*